International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 09-05-2021, Accepted: 24-05-2021, Published: 11-06-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 81-84

भारतेन्दु युगीन साहित्य में व्यंग्य की अभिव्यक्ति

Rahul Dev M
Research scholar, Department of Hindi, Sree Shankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala, India

सारांश

हिंदी साहित्य में व्यंग्य का महत्वपूर्ण स्थान है। समाज के हर क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार करना एवं उन विसंगतियों बारे में समाज को सतर्क करने का दायित्व समकालीन हिंदी साहित्य में व्यंग्य के कंधों पर है। आज हिंदी साहित्य जगत में व्यंग्य एक विशाल वृक्ष बन चुका है उस वृक्ष का पालन पोषण भारतेंदु युग में हुआ था। समकालीन हिंदी गद्य व्यंग्य साहित्य का उद्भव भारतेंदु युग से ही माना जा सकता है। समकालीन व्यंग्य साहित्य को ठोस नीव भारतेंदु युग के व्यंग्यकारों ने ही प्रदान किया। भारतेंदु युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी आदि का नाम उल्लेखनीय है। भारतेंदु से ही हिंदी गद्य व्यंग्य का शुभारंभ हुआ था। भारतेंदु युग में प्रहसन और स्तोत्र शैली में सबसे अधिक व्यंग्य लिखा गया था। व्यंग्य निबंध के विकास दृष्टि से भी भारतेंदु युग का महत्वपूर्ण स्थान है।

मूल शब्द: व्यंग्य, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रहसन, स्तोत्र, व्यंग्य निबंध

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के प्रारंभ से ही व्यंग्य हिन्दी साहित्य का महत्वपूर्ण अंग रहा है। पहले व्यंग्य हिन्दी साहित्य में कटाक्ष के रूप में देखने को मिलते थे लेकिन वह आगे चलकर विसंगतियों पर प्रहार करने का एक सशक्त अस्त्र बन गया। पहले व्यंग्य पाठकों को हसाते थे लेकिन आगे चलकर तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विसंगतीयों से पाठकों को सतर्क करने तथा उनके मन में आक्रोश और विद्रोह की भावना जगाने का काम करने लगा। पहले व्यंग्य को हास्य के साथ जोड़कर आलोचक देखते थे लेकिन आज उसकी स्वतंत्र सत्ता बन चुकी है। व्यंग्य को परिभाषित करना बहुत ही कठिन कार्य रहा है क्यों की कार्य के अनुसार व्यंग्य की परिभाषा भी बदलती रहती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने व्यंग्य को परिभाषित करते हुए लिखा है "व्यंग्य वह है जहां कहने वाला अधरोष्ठ से हंस रहा हो और सुनने वाला तिल-मिला उठा हो फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को ओर भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता हो।"[1]

हिन्दी साहित्य जगत के सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी ने व्यंग्य को परिभाषित करते हुए कहा है "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतीयों और पाखंडों का पर्दाफ़ाश करता है।"[2]

प्रसिद्ध व्यंग्य लेखक एवं आलोचक सुभाष चंदर का कहना है "मेरी दृष्टि में व्यंग्य वह गंभीर रचना है जिसमें व्यंग्यकार विसंगति के तह में जाकर उस पर वक्रोक्ति ,वागवैद्ग्ध्य आदि भाषिक शक्तियों के माध्यम से तीखा प्रहार करता है। उसका लक्ष्य पाठक को गुदगुदाना ना होकर उससे करुणा ,खीझ अथवा आक्रोश की पावती लेना होता है।" [3] व्यंग्य लेखक का वह अस्त्र है जिसके माध्यम से वह समाज में व्याप्त

विद्रूपताओं का पोल खोलता है तथा समाज को उन विसंगतीयों के प्रति जागृत और पाठकों मन में उन विद्रूपताओं के खिलाफ विद्रोह उत्पन्न करता है।

भारतेन्दु युग की परिस्थितियां बड़ी विकल थी। भारत में अंग्रेजों का शासन था सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक सभी क्षेत्र कुरीतियों से भरी हुई थी। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर अत्याचार करना, जाति व्यवस्था, धार्मिक कट्टरपन, धार्मिक अंधविश्वास आदि भारतेन्दु युग में अपनी चरम सीमा पर थी। भारतेन्दु युग अंग्रेजों के कुरीतियों के खिलाफ भारत के हर खोने से आवाज़ उड़ने लगी थी। 1857 के असफल क्रांति के बाद अंग्रेजों ने भारतीयों को ओर दबाने की कोशिश किया। अंग्रेजों के फुट डालो शासन करो राजनीति के कारण हिन्दू ओर मुसलमानों के बीच कट्टरपन बड़ता चला गया धार्मिक संघर्ष होने लगे। इस युग हिन्दू और इस्लाम धर्म में अंधविश्वास भी अपनी चरम सीमा पर थे, जाति व्यवस्था, छुआछूत, बाल विवाह, अमीर मुसलमानों द्वारा गरीब मुसलमानों पर अत्याचार, डोंगी फकीरों का शोषण आदि हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म को जहरीला बना दिया था। आर्थिक तौर पर अंग्रेजों ने भारतवासियों के कमर तोड़ दिए। अंग्रेज भारत से माल लेकर विदेश ले जाते थे और वहाँ से चीजें बनाकर भारत ले आते थे और यहाँ दुगने दाम में बेचते थे वह माल भारतवासियों मजबूरन खरीदना पड़ते थे। प्राकृतिक आपदाओं के कारण भारत के किसान और आम जानता वैसे भी टूट चुके थे ऊपर से अंग्रेजों का आर्थिक शोषण का शिकार भी होने लगे। हर क्षेत्र विसंगतीयों से भरा रहा जनता हताश और बे सहारे थे। यह समय व्यंग्य के लिए अनुकूल था लेकिन कोई व्यंग्यकार उभर नहीं पाया लेकिन हिन्दी व्यंग्य साहित्य के इतिहास में भारतेन्दु युग का महत्वपूर्ण स्थान हैं। आधुनिक हिन्दी व्यंग्य साहित्य का सूत्र पात भारतेन्दु युग से ही हुआ। भारतेन्दु युगीन लेखकों द्वारा हिन्दी व्यंग्य साहित्य के लिए जो योगदान रहा है वह महत्वपूर्ण है। भारतेन्दु युग से ही हिन्दी गद्य साहित्य का विकास शुरू होता हैं। हिन्दी व्यंग्य गद्य का भी विकास भारतेन्दु युग से ही शुरू हुआ जो आज एक विशाल वृक्ष बन चुका हैं, इस व्यंग्य रूपी विशाल वृक्ष का बीज भारतेन्दु युग में ही बोया गया था। भारतेन्दु युगीन व्यंग्यकारों में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, बालमुकुन्द गुप्त, पंडित माधव प्रसाद मिश्र आदि का नाम उल्लेखनीय है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी भारतेन्दु युग के व्यंग्य साहित्य के बारे में लिखते है "जैसा की कहा जा चुका हैं कि हास्यविनोद की प्रवृत्ति इस काल के प्रायः सब लेखकों में थी। प्राचीन और नवीन के संघर्ष के कारण उन्हें हास्य के अवलंबन दोनों पक्षों में मिलते थे। जिस प्रकार बात–बात में बाप-दादों की दुहाई देने वाले, धर्म के आडंबर की आड़ में दुराचार छिपाने वाले पुराने खूसट उनके विनोद के लक्ष्य थे, उसी प्रकार पश्चिमी चालढाल की और मुंह के बल गिरने वाले फैशन के गुलाम भी।"[4]

भारतेन्दु युग के व्यंग्य का मूल विषय अंग्रेजी कुशासन, पश्चिमी सभ्यता का अंधा अनुकरण, धार्मिक अंधविश्वास आदि रहा हैं। "भारतेन्दु-युग में हास्य व्यंग्यात्मक कविताओं की भी प्रचुर परिमाण में रचना हुई। पश्चिमी सभ्यता ,विदेशी शासन, सामाजिक अंधविश्वासों , रूढ़ियों आदि पर व्यंग्य करने के लिए कवियों ने विषय और शैली की दृष्टि से अनेक नये प्रयोग किये। इस दिशा में भारतेन्दु का योगदान महत्वपूर्ण है।"[5]

भारतेन्दु युग के एक विशेष व्यंग्य लेखन शैली थी स्तोत्र शैली, भारतेन्दु ने इसका आविष्कार किया था और राधाचरण गोस्वामी ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया था। भारतेन्दु ने "अंग्रेज स्तोत्र", "कंकड़ स्तोत्र" आदि लिखे और राधाचरण गोस्वामी ने "रेल्वे स्तोत्र", "नापित स्तोत्र", "मूषक स्तोत्र" आदि स्तोत्र रचनाएं की। भारतेन्दु युग के अधिकतर रचनाकारों ने व्यंग्य को प्रस्तुत करने के लिए प्रहसन और स्तोत्र शैली का ही प्रयोग किया है।

भारतेन्दु युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में भारतेन्दु का ही नाम सबसे पहले आते है। जैसे की हिन्दी साहित्य में

लग-भग सभी गद्य रचनाओं का विकास का श्रीगणेश भारतेन्दु जी के शुभ हाथों से ही हुआ था उसी प्रकार हिन्दी व्यंग्य गद्य रचनाओं का शुभ आरंभ भारतेन्दु जी के शुभ हाथों से ही हुआ है। भारतेन्दु द्वारा 1973 में रचित 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' हिन्दी साहित्य का पहली व्यंग्य रचना हम मान सकते हैं। इसके अलावा अंधेर नागरी-चौपट राजा, भारत दुर्दशा आदि व्यंग्य नाटक भी भारतेन्दु जी ने लिखे। भारतेन्दु जी के व्यंग्य कर्म के बारे में व्यंग्य आलोचक सुभाश चंदर का कहना है "भारतेन्दु अपने युग की अन्यतम अभिव्यक्ति के रूप में जाने जाते है। युगीन चेतना को वाणी देने के लिए उन्होंने कविता, गद्य, अनुवाद सभी में अपना कौशल दिखाया लेकिन उनकी ख्याति का सबसे बड़ा आधार उनका व्यंग्य ही है।"[6]

भारतेन्दु जी के व्यंग्य साहित्य का मूल विषय अंग्रेजों का कुशासन था, इसके अलावा उन्होंने तत्कालीन धार्मिक विकृतियों पर भी तीखा प्रहार किया। पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, तत्कालीन सामाजिक एवं आर्थिक विसंगतियां जैसे महंगाई आदि उनके व्यंग्य के मूल स्वर रहे हैं। भारतेन्दु जी ने व्यंग्य कविताओं का भी सृजन किया उन में बंदरसभा, उर्दू का स्यापा, नए जमाने की मुखरी आदि महत्वपूर्ण हैं। "नए जमाने के मुकरी" रचना में भारतेन्दु ने अमीर खुसरो के समान शैली में मुखरियों के माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक विद्रूपताओं पर कटाक्ष किया है। भारतेन्दु ने व्यंग्य लेखों का भी शुभ आरंभ किया था। उनके द्वारा रचित प्रमुख व्यंग्य लेख हैं "स्वर्ग में विचार सभा" और "चूसा पैगंबर"। 'स्वर्ग में विचार सभा' रचना का मूल स्वर सामाजिक विसंगतियां हैं और 'चूसा पैगंबर' का मूल विषय धार्मिक विसंगतियां हैं।

भारतेन्दु के पश्चात इस युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में बालकृष्ण भट्ट का नाम आता है। बालकृष्ण भट्ट के व्यंग्य निबंध काफी लोक प्रिय रहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी भट्ट जि के बारे में अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखते है "व्यंग्य और वक्रता उनके लेखों में भी भरी रहती है और वाक्य भी बड़े-बड़े होते हैं।"[7]

बालकृष्ण भट्ट जी बड़े मीठे व्यंग्यकार थे, उनके व्यंग्य में तीखापन का अभाव था क्यों की उनका व्यंग्य में हास्य अधिक था प्रहार करने की क्षमता कम। सुभाश चंदर बालकृष्ण भट्ट के बारे में लिखते है "वैसे भी उनके व्यंग्य में हास्य के मात्रा अधिक है, व्यंग्य का तीखापन कम।"[8]

बालकृष्ण भट्ट जी ने भारतेन्दु युग में नूतन शैली का प्रयोग किया व्यंग्य आलोचक डॉक्टर: बरसने लाल चतुर्वेदी भट्ट जी के बारे में लिखते है " भट्ट जी ने हास्य-सृजन के हेतु निबंधों की एक शैली को जन्म दिया था वह था दवाइयों के नुस्खों के रूप में व्यंग्य करना।"[9]

भट्ट जी द्वारा रचित प्रमुख व्यंग्य रचनाएं हैं "जैसा काम वैसा परिणाम", "कलीराज की सभा", "रेल का विकट खेल" आदि के अलावा आँख, कान, वकील आदि व्यंग्य निबंध भी लिखे।

भारतेन्दु युग के एक और प्रमुख व्यंग्यकार है प्रताप नारायण मिश्र, प्रताप नारायण मिश्र जी ने भारतेन्दु के समान व्यंग्य नाटक, निबंध आदि लिखे। प्रताप जी के व्यंग्य रचनाओं का मूल विषय सामाजिक विसंगतियां थी। 'काली कौतुक रूपक' प्रताप नारायण मिश्र जी द्वारा लिखित प्रमुख व्यंग्य नाटक है प्रताप जी ने इसके अलावा 'बात', 'होली है', 'काली कोष' आदि व्यंग्य निबंध भी लिखे। प्रताप नारायण मिश्र के व्यंग्य लेखन करने की शैली उन्हें अन्य लेखकों से भिन्न करते हैं। प्रताप जी व्यंग्य लेखन के लिए आम विषयों को ही चुनते थे, उनके व्यंग्य रचनाओं को पढ़ते समय पाठकों को ऐसा प्रतीत होता था मानो लेखक उनसे खुद बात कर रहे हो।

प्रताप नारायण मिश्र के पश्चात भारतेन्दु युग के महान व्यंग्य लेखकों में राधाचरण गोस्वामी का स्थान आता है। भारतेन्दु के बाद राधाचरण गोस्वामी ने सबसे अधिक व्यंग्य स्तोत्र लिखे हैं। गोस्वामी के अधिकतर व्यंग्य रचनाओं का लक्ष्य जनता का मनोरंजन था। राधाचरण गोस्वामी के व्यंग्य रचनाओं में तीखापन का अभाव रहा है फिर भी उनके कई रचनाएँ राजनीतिक दमन और सामाजिक दुराचारों पर तीखा प्रहार करते हैं।

'यम लोग की यात्रा', 'उल्लू गाथा' आदि राधचरण गोस्वामी द्वारा लिखित प्रमुख व्यंग्य रचनाएँ हैं।

बालमुकुन्द गुप्त हिन्दी साहित्य के पहले व्यंग्य स्तंभ लेखक थे। बालमुकुन्द गुप्त द्वारा लिखित 'भारत मित्र' पत्रिका में प्रकाशित "शिव शम्भू के चिट्ठे" को हिन्दी साहित्य का पहला व्यंग्य स्तंभ माना गया है। बालमुकुन्द गुप्त जी का अधिकतर व्यंग्य लार्ड कर्जन के नीतियों पर प्रहार करते हैं। राजनीतिक विसंगतीयों के साथ अपने समय के सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यक विद्रूपताओं पर भी उन्होंने प्रहार किया। "आत्माराम" भट्ट जी द्वारा लिखित साहित्यक व्यंग्य हैं। मधुसूदन गोसावमी इस युग के एक और प्रमुख व्यंग्यकार थे। मधुसूदन गोस्वामी राधाचरण गोस्वामी द्वारा संपादित 'भारतेन्दु' पत्रिका में व्यंग्य लेखन करते थे। मधुसूदन गोस्वामी व्याज स्तुति शैली में व्यंग्य लेखन करते थे। इनका प्रमुख व्यंग्य रचना है "समाचार पत्र" इस रचना में गोस्वामी जी ने व्याज स्तुति के माध्यम से समाचार पत्र के विराट रूप पर व्यंग्य कसते हैं।

इस युग के अन्य प्रमुख व्यंग्य लेखकों में बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', किशोरीलाल गोस्वामी, गोपाल राम गहमरी आदि का नाम उल्लेखनीय हैं।

भारतेन्दु युग के परिस्थितियां बड़ी विकट थी, यह समय व्यंग्य लेखन के अनुकूल थे लेकिन कोई भी व्यंग्यकार के रूप में समाज को सुधारने के लिए उभर नहीं पाए। लेकिन व्यंग्य साहित्य की दृष्टि से यह युग व्यंग्य गद्य साहित्य का आदिकाल हैं। भारतेन्दु युग के व्यंग्यकार बीते हुए या आने वाले समय के व्यंग्यकारों के लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत रहे होंगे इसमें को शक नहीं। भारतेन्दु युग के लेखकों का व्यंग्य का मूल विषय अंग्रेजों का कुशासन था। अंग्रेजों के जन द्रोह नीतियों के खिलाफ सभी लेखकों के व्यंग्य रचना में आक्रोश दिखाई देते हैं लेकिन उनमें समाज सुधारक के मनोभाव की कमी है जो एक व्यंग्य लेखक के लिए सबसे अधिक आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. डॉ: हज़ारी प्रसाद द्विवेदी , कबीर, प्रथम संस्करण,1942, हिन्दी ग्रंथ रतनागर कार्यालय, हरिबाग, मुंबई-9, पृ सं:164
2. हरिशंकर परसाई, परसाई रचनावली, प्रथम संस्करण 2005, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली-110 002, पृ सं:10
3. सुभाष चंदर, हिन्दी व्यंग्य का इतिहास, तृतीय संस्करण 2017, भावना प्रकाशन दिल्ली, पृ सं:25
4. आचार्य राम चंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य के इतिहास, आठवाँ संस्करण 2012, पहली मंजिल ,दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग,इलाहाबाद-211001, पृ सं:311
5. डॉ:नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, अडतालीसवां संस्करण 2015,ए-95, सेक्टर-5, नौएडा-201301, मयूर पेपरबैकस, पृ सं:445
6. सुबाश चंदर, हिन्दी व्यंग्य का इतिहास, तृतीय संस्करण 2017, भावना प्रकाशन दिल्ली पृष्ट सं :56
7. रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, आठवाँ संस्करण 2012, पहली मंजिल ,दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग,इलाहाबाद-211001, पृ सं :320
8. सुभाष चंदर ,हिन्दी व्यंग्य का इतिहास, तृतीय संस्करण 2017, भावना प्रकाशन दिल्ली, पृ सं:64
9. डॉ: बरसानेलाल चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य में हास्य रस, प्रथम प्रकाशन, हिन्दी साहित्य संसार, नई सड़क दिल्ली, पृ सं:265